



## International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

# 19 वीं शताब्दी में उर्दू की पाठ्यपुस्तकें; मुंशी ज़काउल्लाह के विशेष सन्दर्भ में

\*<sup>1</sup> Dr. Abdul Ahad

\*<sup>1</sup> Assistant Professor, Department of History, University of Delhi, Delhi, India.

### Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 15/Nov/2025

Accepted: 13/Dec/2025

### सारांश:

इस पेपर में दिखाया गया है कि 19 वीं शताब्दी में उर्दू की पाठ्यपुस्तकें जो मुंशी ज़काउल्लाह द्वारा तैयार की गयीं उनके पीछे लिखने की क्या मानसिकता थी। ज़काउल्लाह उत्तरी भारत के विद्यार्थियों के लिए उर्दू देशीय भाषा में लिखी पुस्तकों के पक्ष में थे। उर्दू की यह पाठ्यपुस्तकें आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती हुई प्रतीत होती हैं। यह दो रूपों में सामने आता है। एक तो पश्चिमी विज्ञान व गणित जैसे विषयों के पाठ्यपुस्तकों के अनुवाद के रूप में और दूसरा ज़काउल्लाह के द्वारा पाठ्यपुस्तकों में दर्ज किए गए ब्रिटिश सरकार के अनेक आधारभूत कार्यों के रूप में जैसे सिंचाई, मुद्रण और रेलवे। जिससे प्रतीत होता है कि वह ब्रिटिश सरकार के कार्यों को विद्यार्थियों को अवगत कराकर सत्ता के लिए उनसे वैधता प्राप्त कराना चाहते थे। पाठ्यपुस्तकें निश्चित रूप से आधुनिक काल में सत्ता के कार्यों व उनकी विचारधारा को जनता के मध्य प्रचारित करने का मुख्य माध्यम बन कर सामने आयीं। यह औपनिवेशिक जनता को असम्य से सम्य बनाने की मानसिकता को दिखाता है।

### \*Corresponding Author

Dr. Abdul Ahad

Assistant Professor, Department of  
History, University of Delhi, Delhi,  
India.

**मुख्य शब्द:** पाठ्यपुस्तक, आधुनिक, भूगोल, विज्ञान, शिक्षा, सिंचाई, विज्ञान

### प्रस्तावना:

आधुनिक काल की शिक्षा व्यवस्था में स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार करना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। यह शैक्षणिक कार्यों का एक महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है। जो यह निर्धारित करता है कि बच्चों को कब क्या पढ़ाना है और क्या नहीं।

19 वीं शताब्दी में पाठ्यपुस्तकें तैयार करने का यह कार्य ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा प्रांतीय समितियों का गठन कर और स्थानीय सरकारों से परामर्श कर अंजाम दिया जा रहा था। पाठ्यपुस्तकों की योजना के लिए प्रांतों की परिस्थितियों के हिसाब से वहाँ की भाषा, ग्रामीण जीवन के अंग जैसे कृषि, पशुपालन व सिंचाई इत्यादि विषय विचारणीय थे। 19वीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में पाठ्यपुस्तक समिति का स्पष्ट रूप से विचार था कि पाठ्यपुस्तकों में अधिक से अधिक व्यावहारिक व आधुनिक ज्ञान पर बल दिया जाए। ज़काउल्लाह द्वारा जो पाठ्यपुस्तकें लिखी गईं और जिनका अनुवाद किया गया उनमें यह विमर्श स्पष्ट नजर आता है।

इस लेख में औपनिवेशिक सरकार की पाठ्यपुस्तक नीति का विश्लेषण किया गया है। तथा उर्दू की ऐसी ही किताबों को विशेष रूप से लिया गया है जो छात्र होने के नाते उनके लिए महत्वपूर्ण थीं जैसे मुंशी ज़काउल्लाह ने गणित, विज्ञान, भूगोल इत्यादि पर अनेक किताबें लिखीं व उर्दू में अनुवाद की। इस प्रकार की कुछ किताबें थीं जैसे सिलसिलातुल उलूम, उर्दू की चौथी किताब, अलजेब्रा फॉर

बिगिनर्स, चार अंसुर इल्म-ए-कीमिया (रसायन विज्ञान पर), जोगरफिया रियाज़िया, जोगरफिया तबीये और जोगराफिया मुब्तादियों की वास्ती इत्यादि। इसके अलावा ऐसी किताबों का भी ज़िक्र है जैसे मबादिउल इंशा जो छात्रों में कला का कोई महत्वपूर्ण फन (कौशल) सृजित करना चाहती थी। इस पुस्तक में बताया गया कि नज़्म और शेरों-शायरी कैसे लिखी जानी चाहिए। इसी तरह एक अन्य पुस्तक रिसाला मजालिस-ए-मुनाज़िरा में मदरसे में पढ़ने वाले छात्रों में बहस व वार्तालाप जैसे कौशल की कमी को कैसे दूर किया जाए और साथ ही उन्हें यह भी सिखाया जाए कि किसी विषय पर किस तरह स्वयं को अभिव्यक्त करना है अर्थात् मदरसे के छात्रों को वह स्वयं का आत्मनिरीक्षण (introspect) करने पर बल देते हैं। यह किताबें वर्तमान में भी छात्रों में जरूरी फन को पैदा करने के लिए प्रासंगिक हैं क्योंकि ज़काउल्लाह जैसे लिखते हैं कि मदरसे के छात्रों को अल्फाज़ (शब्द) तो सिखाए जाते हैं लेकिन उन अल्फाज़ों के लिए बोलना नहीं सिखाया जाता। यह वक्तव्य आज भी मदरसों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए प्रासंगिक है।

### ब्रिटिश सरकार की पाठ्यपुस्तक नीति

1835 के लार्ड मैकाले के मिनट्स में भारत की शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी भाषा को प्रधानता देने की बात कही गयी थी। अंग्रेजी भाषा के लागू होने के बाद यह देखा गया कि छात्रों ने प्राथमिक और

माध्यमिक स्तर पर अपनी शिक्षा बंद कर दी थी क्योंकि वे एक विदेशी भाषा का सामना करने में असमर्थ थे। इस शिक्षा नीति में इसीलिए अंग्रेजी और देशीय भाषा स्कूलों की एक मिश्रित प्रणाली का हिस्सा बनाया गया। स्कूल प्रणाली के निचले स्तरों पर देशीय भाषा में शिक्षा को व्यवस्थित करने के प्रयास किए गए और उच्च स्तर की शिक्षा में अंग्रेजी को। इस तरह के विभाजन ने “निम्न” और “उच्च” के रूप में कौशल का विभाजन किया हालांकि इसने भारत में औपनिवेशिक राज्य की जरूरतों को ही पूरा किया।<sup>[1]</sup>

आगे 1854 के वुड्स डिस्पैच में स्पष्ट लिखा था कि हम अंग्रेजी भाषा और भारत की स्थानीय भाषाओं को एक साथ यूरोपीय ज्ञान के प्रसार के लिए एक माध्यम के रूप में देखते हैं।<sup>[2]</sup> ब्रिटिश सरकार का मानना था कि यहाँ के निवासियों को यूरोपीय ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और इस ज्ञान को प्रदान करने के लिए के लिए दोनों ही भाषाओं का इस्तेमाल हो क्योंकि अधिकांश जनता स्थानीय भाषाओं को बोलने वाली ही है और साथ ही स्थानीय भाषाओं में यूरोपीय साहित्यिक ग्रंथों का अनुवाद भी हो।<sup>[3]</sup>

1882 में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन करने के लिए हंटर आयोग की नियुक्ति की। हंटर आयोग ने शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए अनेक सुझाव दिए। साथ ही स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पाठ्यपुस्तकों पर भी व्यापक रूप से विचार किया गया। अब ब्रिटिश सरकार शिक्षा के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को लेकर पहले से ज्यादा अब विशेषीकृत भूमिका निभाने को तैयार थी। 1854 के डिस्पैच में जहाँ ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए माध्यम और यूरोपीय ग्रंथों के अनुवाद की बात की गयी थी वहीं अब 1882 शिक्षा के स्तरों को विभाजित कर उनमें कैसी पुस्तकें सरकार को पढ़ानी चाहिए, उस पर विचार किया गया था।

हंटर आयोग में लिखा है कि भारतीय विद्यालयों के लिए उन्नत पाठ्यपुस्तकें तैयार करने का सवाल पिछले कुछ वर्षों से भारत सरकार के पास विचाराधीन था। इस विषय पर 1873 में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जबकि स्थानीय सरकारों से मौजूदा स्कूली किताबों की जाँच के लिए समितियों को नियुक्त करने का अनुरोध किया गया ताकि किसी भी रूप या तत्व के दोषों की खोज की जा सके और उन्हें प्रस्ताव में घोषित सिद्धांतों के साथ सामंजस्य कर बिठाया जा सके।<sup>[4]</sup> यह बात सही है कि पाठ्यपुस्तकों की जाँच करने के लिए स्थानीय सरकारों की भूमिका बहुत अहम थी लेकिन इनको भारत सरकार के घोषित प्रस्तावों के तहत काम करना था।

इस संदर्भ में 1877 में भारत सरकार ने स्थानीय सरकारों से रिपोर्ट प्राप्त की। साथ ही कई प्रान्तों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित कर एक छोटी सामान्य समिति (पाठ्यपुस्तक समिति) बनाई गयी। इस सामान्य समिति को कई मामलों पर विचार करना था जैसे प्रांतीय रिपोर्टों पर और देशी भाषाओं में विधि व न्यायशास्त्र पर पाठ्यपुस्तकों के सृजन की जाँच करना था।<sup>[5]</sup> इस तरह सरकार अब विभिन्न विषयों के तहत देशीय भाषा का दायरा धीरे-धीरे बढ़ा रही थी और यह भी तय करना चाहती थी कि विधि व न्यायशास्त्र जैसे प्रोफेशनल विषयों पर भी पुस्तकें देशीय भाषा में सुलभ हो। इस समिति में पाश्चात्य साहित्य की पुस्तकों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में कराने की बात भी कही गयी थी और साथ ही यह भी कहा गया कि देशीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कृत किया जाये। इस तरह 1854 के डिस्पैच में जो बातें देशीय भाषा में शिक्षा और अनुवाद के बारे में की गयी थी उसकी मुंशी ज़काउल्लाह और नज़ीर अहमद ने अपने प्रयासों से भलीभांति अंजाम दिया। ऐसा ही एक प्रयास नज़ीर अहमद द्वारा स्वयं भारतीय दंड संहिता (आई.पी.सी.) का 1860 के लगभग उर्दू में अनुवाद कर किया गया था।

पाठ्यपुस्तक समिति की रिपोर्ट में प्राथमिक स्कूलों की पुस्तकों पर भी सुझाव दिए गए। यह कहा गया कि प्राथमिक स्कूलों में निर्देश सदैव मातृभाषा में दिया जाना चाहिए। छोटे बच्चों में सामान्य विषयों की जानकारी मुहैया कराने के लिए भी कई जरूरी बिन्दुओं पर भी

दिया जैसे उनको पढ़ना व लिखना सिखाया जाए, मातृभाषा की व्याकरण के नियमों से अवगत कराया जाए और सामान्य अंकगणित की जानकारी भी दी जाए। भूगोल विषय की व्यावहारिक जानकारी विद्यार्थियों के अपने जिले से विशेष सन्दर्भ लेकर और सामान्य प्राकृतिक प्रक्रियाओं का ज्ञान प्रदान किया जाए।<sup>[6]</sup>

ब्रिटिश सरकार का भी यही मानना था कि प्राथमिक स्कूलों में छोटे बच्चों को आकर्षक तरीके से समझाया जाए न कि अधिक वैज्ञानिक शब्दावली के माध्यम से। शिक्षकों को ऐसे बच्चों को पढ़ाने में उन सामान्य चीज़ों से समझाना चाहिए जो उनकी प्रतिदिन की दिनचर्या से सम्बन्धित हो। यह आग्रह किया गया कि प्राथमिक विद्यालयों के लिए अभिप्रेत (intended) पाठ्यपुस्तकें विशेष रूप से तैयार की जानी चाहिए ताकि भारतीय रैयत को ऐसी जानकारी प्रदान की जा सके जो उनके लिए उपयोगी हो और उन्हें इसी उद्देश्य के साथ समय-समय पर संशोधित किया जाना चाहिए।<sup>[7]</sup>

जिस तरह के विचार पाठ्यपुस्तकों के सन्दर्भ में प्राथमिक स्कूलों के लिए थे ऐसी ही सोच ग्रामीण स्कूलों को लेकर भी थी। उनका स्पष्ट मानना था कि यहाँ की पाठ्यपुस्तकों को इस तरह डिज़ाइन किया जाये ताकि वह ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की दिनचर्या और जरूरतों को छात्रों को बता सके।<sup>[8]</sup> यह एक अहम बिंदु था। जिस देश की अधिकांश जनता गाँवों में ही रहती थी और कृषि व इससे सम्बन्धित क्षेत्रों पर अपना जीवन निर्वाह करती थी। तो वहाँ के छात्रों के लिए स्कूलों के माध्यम से इन सभी क्रियाकलापों की जानकारी देना बहुत महत्वपूर्ण था।

ब्रिटिश सरकार जिस तरह स्कूलों में मातृभाषा पर ध्यान दे रही थी मुंशी ज़काउल्लाह सरकार की इस नीति से सहमत थे। ज़काउल्लाह का स्पष्ट विचार था कि छात्रों को मातृभाषा में शिक्षा देने पर लाभ होगा और हम जो अंग्रेजी में शिक्षा प्रदान कराने के लिए कहते हैं उसमें दो-गुणा समय लगेगा।<sup>[9]</sup> अर्थात् एक तो विदेशी भाषा को समझने में और दूसरा विषय की संकल्पना में। और जब हम अपनी सारी ऊर्जा का उपयोग मातृभाषा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने पर देंगे तो उससे छात्रों को अधिक लाभ होगा।

20वीं शताब्दी की शुरुआत में कुछ ऐसे प्रान्त थे जहाँ पाठ्यपुस्तकें को तैयार कराने की जिम्मेदारी मुख्य रूप से निजी उद्यमियों के पास थी जैसे मद्रास, बंगाल, सयुक्त प्रान्त, पूर्वी बंगाल और असम थे। लेकिन बंगाल में मौजूदा प्रणाली को संशोधित करना आवश्यक महसूस किया गया अर्थात् निजी लेखकों और फर्मों ने जो किताबें 1901 की स्थानीय भाषा योजना के अनुसार तैयार की थी उनको असंतोषजनक पाया गया था और विभाग के लिए यह बेहतर समझा गया कि पाठ्यपुस्तकें स्वयं ही तैयार की जाये बजाए निजी फर्मों के। 1908-09 की समिति के अनुसार पुस्तकों को तैयार करने के लिए लेखकों का चयन किया गया।<sup>[10]</sup>

इसके अलावा, सयुक्त प्रान्त में भी एक समिति नियुक्त की गयी। इस समिति ने प्रचलित किताबों को बदलने का फैसला किया। साथ ही समिति ने पाँच साल बाद 1907 में हिंदी और उर्दू शिक्षण स्कूलों में उपयोग के लिए समानांतर पाठकों को सृजित करने का सुझाव दिया। इस श्रंखला पर तुरंत ही आलोचनाओं की, जो विशेष रूप से भाषा और विषय दोनों की सरलता पर आधारित थी। इस पर विचार करने के लिए एक सयुक्त समिति बनाई गयी जिसने पाया कि कई आलोचनाएं आधारहीन थी पुस्तकें आगे की पढ़ाई की तैयारी करने के लिए उपयुक्त नहीं थी। हालांकि सामान्य पुनर्विचार के बाद संशोधन का प्रश्न हटा दिया गया।<sup>[11]</sup> इस तरह 20वीं शताब्दी की शुरुआत में विभिन्न प्रान्तों की सरकारें समय-समय पर तैयार की जा रही पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन कर रही थी और जिस तरह की कमियाँ उनमें नजर आ रही थी उनको दूर करने का प्रयास कर रही थी। लेकिन कहीं न कहीं यह पाठ्यपुस्तकों को तैयार करने में सलग्न निजी फर्मों पर सरकारी नियन्त्रण को ओर अधिक मजबूत कर रही थी।

## सर सैयद अहमद के अनुवाद के प्रयास

19 वीं शताब्दी में भारतीय सुधारकों ने शुरू से अपना संघर्ष मुख्य रूप से भारतीय भाषाओं के अखबारों और साहित्य के माध्यम से चलाया। भारतीय भाषाएं अपनी भूमिका सफलतापूर्वक निभा सकें, इसके लिए उन्होंने प्रारंभिक पाठ्यपुस्तकें बनाने जैसा काम भी अपने हाथ में लिया। उदाहरण के लिए ईश्वरचंद्र विद्यासागर तथा रवींद्रनाथ ठाकुर दोनों ही महानुभावों ने बंगला की प्रारंभिक कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं। इन पुस्तकों का आज भी इस्तेमाल किया जा रहा है। वास्तव में आम जनता के बीच आधुनिक तथा सुधारवादी विचारों का प्रसार मूलतः भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही हुआ।<sup>[12]</sup> देशीय भाषा में पाठ्यपुस्तकें लिखने के प्रयास न केवल उर्दू में हुए बल्कि यह प्रयास अन्य भाषाओं में भी हुए जैसे बंगला भाषा में। इसके साथ ही देशीय भाषा को बढ़ावा देने के लिए सर सैयद ने 1 अगस्त 1867 को उत्तर पश्चिमी प्रान्त (आज का उत्तर प्रदेश) की ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन की ओर से वायसराय को कई निवेदन किए जैसे एक ऐसी शैक्षिक संस्था स्थापित की जाए जिसका माध्यम देशीय भाषा हो। दूसरा उन्होंने यह भी कहा कि देशीय भाषा को बढ़ावा देने के लिए अलीगढ़ वैज्ञानिक समिति जहाँ तक हो सकेगा, कई जरूरी अनुवाद अंग्रेजी से उर्दू में करेगी।<sup>[13]</sup>

भारत सरकार ने सर सैयद के इस प्रस्ताव के प्रति दिलचस्पी दिखाई। 5 सितंबर 1867 को सचिव ने लिखा कि हमारा उद्देश्य न केवल विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों का अनुवाद करना है बल्कि विद्यार्थियों के लिए कला व विज्ञान दोनों ही अध्ययनों में ऐसी पुस्तकें तैयार करने की इच्छा है क्योंकि देशीय भाषा में पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं। इसके साथ ही गवर्नर जनरल अलीगढ़ वैज्ञानिक समिति के यूरोपीय कार्यों को देशीय भाषा में अनुवाद करने की योजना के प्रति सहमति प्रकट करते हैं।<sup>[14]</sup> सर सैयद द्वारा 1860 के दशक में स्थापित वैज्ञानिक समिति के इस प्रकार के कार्यों का लक्ष्य लोगों के मध्य वैज्ञानिक मिजाज को बढ़ावा देना था।

भारत सरकार के इस पत्र ने भारत के कई बड़े शोधार्थियों को अनुवाद के कार्यों को शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसमें दिल्ली के तीन प्रसिद्ध व्यक्तियों का वर्णन किया जा सकता है-मास्टर प्यारे लाल, मौलवी जकाउल्लाह और पंडित धर्म नारायण। जब ब्रिटिश सरकार ने देखा कि ऐसे प्रसिद्ध विद्वान इस प्रकार की योजना में हिस्सा ले रहे हैं तो सरकार ने ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन के इस प्रस्ताव पर मजबूती के साथ अपनी स्वीकृति दी।<sup>[15]</sup>

## पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन

जहाँ तक पाठ्यपुस्तकों व अन्य प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशन का सवाल है तो वह उत्तरी भारत के कई स्थानों पर होता था। उत्तर भारत में मुद्रण के स्थानों से पता चलता है कि आगरा, इलाहाबाद, कानपुर, मेरठ और लाहौर जैसे ब्रिटिश प्रशासनिक शहरों और छावनीयों ने सबसे पहले प्रिंटिंग प्रेस का अधिग्रहण किया था। अन्य स्थानों में महत्वपूर्ण उत्प्रेरक जैसे आगरा और लुधियाना में मिशनरी और स्कूल-बुक सोसायटी और दिल्ली, लखनऊ और बनारस में भारतीय अदालतें थीं। मुरादाबाद, अलीगढ़ और बरेली जैसे मुफस्सिल शहर और मथुरा जैसे तीर्थस्थल अन्य स्पष्ट केंद्र थे क्योंकि उनके पास साक्षर जनशक्ति और प्रकाशनों के लिए तैयार बाजार दोनों थे।<sup>[16]</sup> इस तरह पता चलता है कि किसी स्थान का प्रकाशन केंद्र बनने के लिए अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग कारण जिम्मेदार थे। लेकिन एक बात सभी जगह सामान्य थी कि वहाँ साक्षर लोगों की संख्या अन्य ऐसे स्थानों के मुकाबले जहाँ छापाखाना नहीं है ज्यादा थी। भारतीय जनगणना के आंकड़ों के आधार पर भी कहा जा सकता है कि आगरा व अलीगढ़ में साक्षर लोगों की संख्या अधिक थी।

जहाँ तक उत्तरी भारत में वाणिज्यिक प्रकाशन के प्रमुख केंद्र का सवाल है वह आगरा, कानपुर, मेरठ और दिल्ली में केंद्रित थे। प्रिंटर-

प्रकाशक लगभग समान शैलियों और शीर्षकों को उर्दू में लाते हैं और जल्द ही हिंदी में भी, हालांकि ज्यादातर सस्ते लिथोग्राफ रूप में लखनऊ (और दिल्ली) में केंद्रित साहित्यिक उर्दू प्रकाशन में भी लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों के उपक्षेत्रीय नेटवर्क थे जबकि अधिक से अधिक प्रकाशक स्कूली पाठ्यपुस्तकों के लिए बाजार में कूद पड़े विशेष रूप से आगरा, बनारस और इलाहाबाद में भी।<sup>[17]</sup> इससे स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ उर्दू के सामान्य पाठकों व लेखकों के लिए पुस्तकें लखनऊ व दिल्ली में मुख्य रूप से प्रकाशित हो रही थी वहीं स्कूलों के लिए भी पुस्तकों को संयुक्त प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे आगरा, बनारस व इलाहाबाद में तैयार किया जा रहा था।

## दिल्ली कॉलेज के अंतर्गत अनुवाद का कार्य

औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था में देशीय भाषा के महत्व को ब्रिटिश सरकार द्वारा भी जल्द ही समझ लिया गया था। 1835 में लार्ड विलियम बेंटिक द्वारा अंग्रेजी शिक्षा अधिनियम को पारित होने के कुछ ही वर्षों के भीतर पुनर्विचार करना पड़ा क्योंकि गवर्नर-जनरल लॉर्ड ऑकलैंड की सरकार ने अंग्रेजी के माध्यम से जनता के बीच शिक्षा के प्रसार की कठिनाई का आकलन किया था। 24 नवंबर 1839 को जारी अपने मिनट्स के माध्यम से उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अच्छी पाठ्यपुस्तकें और प्रशिक्षित शिक्षक 'स्थानीय' भारतीय भाषाओं के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी और अन्य पश्चिमी शिक्षा के 'उपयोगी यूरोपीय ज्ञान' के शिक्षण को सुगम बना सकते हैं (जैस्टैपिल और मोइर 2013)।<sup>[18]</sup> इस प्रकार अंग्रेजी शिक्षा अधिनियम में संशोधन किया गया ताकि भारतीय 'स्थानीय' भाषाओं के प्रसार और अंग्रेजी साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा सके ताकि इसे भारतीय जनता के लिए अधिक सुलभ बनाया जा सके।

यूरोपीय भाषाओं से भारतीय स्थानीय भाषाओं में अनुवाद को प्रोत्साहित करने का मुख्य उद्देश्य सरकारी शिक्षा नीति द्वारा निर्धारित शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करना था, जिसमें मिडिल स्कूल तक स्थानीय भाषाओं में शिक्षा अनिवार्य थी। हालाँकि, यह एकतरफा प्रयास नहीं था। अंग्रेजी-शिक्षित भारतीय बुद्धिजीवियों द्वारा भी ठोस प्रयास किए गए, जो 'स्थानीय' शिक्षा के माध्यम से जनता में यूरोपीय शिक्षा और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक थे।<sup>[19]</sup>

19वीं शताब्दी के मध्य में दिल्ली कॉलेज के दो खंड थे। एक ओरिएंटल पाठ्यक्रम का एक मदरसा और दूसरा पाश्चात्य पाठ्यक्रम का एक कॉलेज। लेकिन दिल्ली कॉलेज का मुख्य नवाचार यह था कि सभी विषय चाहे ओरिएंटल हो या पश्चिमी स्थानीय भाषा उर्दू में पढ़ाए जाते थे। इसे सुगम बनाने के लिए कॉलेज ने फ़ारसी, अरबी, संस्कृत ग्रंथों और यूरोपीय विज्ञान के ग्रंथों का उर्दू में बड़े पैमाने पर अनुवाद परियोजना शुरू की।<sup>[20]</sup> इसके लिए यूरोपीय प्रशासकों और भारतीय शिक्षकों और कॉलेज के छात्रों के बीच वैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर ग्रंथों का अनुवाद और प्रकाशन करने के लिए सहयोग की आवश्यकता थी। कॉलेज ने अपना स्वयं का प्रेस स्थापित किया जिसने न केवल पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विज्ञान में समकालीन विकास, अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं और साहित्य और जीवनी के लोकप्रिय कार्यों के क्रमबद्ध अनुवादों के बारे में लेख भी प्रकाशित किए।<sup>[21]</sup> इस तरह दिल्ली कॉलेज में शिक्षण व ग्रंथों के अनुवाद के कार्यों में उर्दू भाषा को ही प्राथमिकता दी जाती थी।

जहाँ दिल्ली कॉलेज ने उर्दू भाषा में उपयोगी पश्चिमी ज्ञान की बड़ी संख्या में पुस्तकें प्रकाशित कीं, वहीं बनारस कॉलेज के पंडितों ने इन पुस्तकों को शुद्ध और संस्कृतनिष्ठ हिंदी में नागरी लिपि में प्रकाशित किया, जैसे कि बापू देव शास्त्री की बीजगणित और विश्व भूगोल पर पुस्तकें, जबकि उनकी संस्कृत भाषा की पुस्तक "समतल के तत्व त्रिकोणमिति" का 1859 में वेणी शंकर व्यास ने हिंदी में अनुवाद



किया था (डोडसन 2005)। कॉलेज के एक अन्य पंडित, मथुरा प्रसाद मिश्र ने मान की पुस्तक "सामान्य ज्ञान के पाठ" का हिंदी में अनुवाद किया।<sup>[22]</sup>

दिल्ली कॉलेज ने उर्दू भाषा को बढ़ावा देने के लिए ओर भी कई कार्य<sup>[23]</sup> किए जैसे कॉलेज द्वारा स्वयं की प्रेस से पत्रिकाओं का प्रकाशन। कॉलेज में गणित के प्रोफेसर मास्टर रामचंद्र ने 1840 और 1850 के दशक में प्रेस से जारी पत्रिकाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने एक गणितज्ञ और एक उर्दू स्टाइलिस्ट के रूप में ख्याति प्राप्त की जो अपने स्पष्ट, सरल गद्य के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने दिल्ली कॉलेज द्वारा प्रकाशित दो पत्रिकाओं का संपादन किया: एक पाक्षिक, फवायदु'एन-नाज़िरिन और एक मासिक वैज्ञानिक और साहित्यिक पत्रिका मुहिब-ए हिंद।<sup>[24]</sup>

दिल्ली कॉलेज का अनुवाद का प्रोजेक्ट विशेष था<sup>[25]</sup> जिसके अंतर्गत उर्दू के माध्यम से पश्चिमी विज्ञान, गणित, प्राकृतिक दर्शन आदि की शिक्षा का प्रबंध किया और उत्तरी भारत में सबसे पहले पश्चिम व पूर्व के अनेक तत्वों को समझने की कोशिश की।<sup>[26]</sup> मास्टर रामचंद्र के साथ ही, मुंशी ज़काउल्लाह और डिटी नज़ीर अहमद ने भी इस प्रोजेक्ट उल्लेखनीय भूमिका निभाई। रामचंद्र ने अपने एक लेख तरबियत-ए अहल-ए हिन्द का बयान में आंगवादी शैक्षिक नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि यदि शिक्षा को देशीय भाषा में प्रदान किया जाए तो शिक्षा को बदला जा सकता है।<sup>[27]</sup> इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि रामचंद्र अंग्रेज़ी भाषा के स्थान पर देशीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान कराने के पक्ष में थे हालांकि रामचंद्र ने पश्चिमी विज्ञान व अनुभवजन्य विधियों का समर्थन किया।

मास्टर रामचंद्र ने पाठ्यपुस्तकों का उर्दू में अनुवाद किया और अंग्रेज़ी में दो मूल कृतियों को भी लिखा। इनमें से एक A Treaties on Problems of Maxima and Minima Solved by Algebra उल्लेखनीय थी। इस पुस्तक को सर्वप्रथम 1850 में प्रकाशित किया गया और 1859 में लंदन में पुनर्मुद्रित किया गया था जिसकी सराहना लंदन के एक प्रमुख गणितज्ञ ने भी की और भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा इसके लिए एक पुरस्कार की भी घोषणा की गई।<sup>[28]</sup>

### ज़काउल्लाह द्वारा गणित व विज्ञान पर लिखी किताबें

1870 के दशक में ज़काउल्लाह ने गणित विषय पर कार्यों की 23 खंडों की एक सीरीज सिलसिलातुल उलूम प्रकाशित कराई। यह सीरीज अलीगढ़ वैज्ञानिक समाज और बिहार के वैज्ञानिक समाज के संरक्षण में प्रकाशित हुई थी। इस सीरीज के पहले 17 खंडों के प्रकाशन व का कार्य सर सैयद अहमद द्वारा किया गया। सिलसिलातुल उलूम में जो पाठ्यक्रम साधारण यंत्रों व हाइड्रोस्टाटिक के साथ निहित था वह बी.ए. तक के विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त था।<sup>[29]</sup>

गणित विषय की इस सीरीज में यूक्लिड<sup>[30]</sup> (लगभग 300 ई.पू.) के भी चार खंडों के अनुवाद शामिल किए गए थे। यूक्लिड का मुख्य कार्य Elements (12 पुस्तकें) के रूप में था जो बाद के वर्षों में ज्यामिति विषय के कार्यों का आधार बना।

ज़काउल्लाह ने गणित विषय पर ही इंग्लिश गणितज्ञ आइसाक टॉड हंटर (1820-84) के कार्यों का उर्दू में अनुवाद किया। उन्होंने हंटर की अलजेब्रा फॉर बिगिनर्स नामक पुस्तक का अनुवाद किया। इसमें गणित के सामान्य बिन्दुओं का वर्णन है जैसे जोड़ना, घटाना, गुणा व भाग करना। यह पुस्तक टॉड हंटर ने इंग्लैंड में लिखी थी। यह शुरूआती कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी। साथ ही इसमें यह भी उल्लेख किया गया कि स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र परीक्षा की तैयारी कैसे करें।<sup>[31]</sup>

टॉड हंटर की एक अन्य पुस्तक प्लेन त्रिगोमेट्री का अनुवाद ज़काउल्लाह द्वारा इल्म-ए-मुसल्लस मस्तवी के नाम से किया। यह पुस्तक असंख्य उदाहरणों के साथ कॉलेजों व स्कूलों के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर के लिखी गयी थी। इस पुस्तक में गणित विषय

की त्रिगोमेट्री शाखा के कोणों, वृत्तों व त्रिभुजों इत्यादि का चित्रण भी किया गया है अर्थात् सिद्धांत के साथ उसका प्रयोग करके चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है। प्रत्येक अध्याय के बाद विद्यार्थियों को समझाने के लिए उदाहरण भी दिए गये हैं।<sup>[32]</sup>

इसके अलावा ज़काउल्लाह ने विज्ञान विषयों पर कई ऐसी पाठ्यपुस्तकों को भी लिखा जो विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा प्रदान के लिए अहम थी जैसे चार अंसुर इल्म-ए-कीमिया। यह पाठ्यपुस्तक मुख्य रूप से रसायन विज्ञान के बारे में थी। इसमें रसायन विज्ञान की कई पद्धतियों व विधियों का वर्णन है जिनको चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। रसायन विज्ञान में प्रयोग व अन्वेषण किस तरह किये जाते हैं? उनमें कौन-कौन से तत्वों (elements) व यंत्रों का उपयोग होता है? इसके अंतर्गत चार तत्वों का विश्लेषण किया गया है। इन सभी पहलुओं का वर्णन इस पुस्तक में है।<sup>[33]</sup>

### ज़काउल्लाह द्वारा भूगोल पर लिखी गयी पाठ्यपुस्तकें

ज़काउल्लाह ने स्कूली शिक्षा के एक महत्वपूर्ण विषय भूगोल से संबंधित कई पुस्तकें लिखी। एक ऐसी ही पुस्तक जोगराफिया रियाज़िया में इस विषय से संबंधित कई अहम पहलुओं का वर्णन है। इसमें भौगोलिक पर्यावरण के सामान्य बिंदुओं जैसे हवा कैसे गर्म व ठंडी होती है, हवा का चलना, बादल का बनना और ज़मीन के अंदर पानी की कारीगरी इत्यादि का उल्लेख विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए किया गया है।<sup>[34]</sup>

इसके अलावा ज़काउल्लाह ने जोगराफिय तबीये भी लिखी। इसमें भी भूगोल के सामान्य पहलुओं जैसे हवा व पानी से सम्बन्धित पर्यावरण में होने वाली सामान्य प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है। छात्रों को जमीन के ऊपर तथा नीचे पानी किस तरह जमा होता है और नदी व नालों में पानी का प्रवाह कैसे बना रहता है। इन सभी पहलुओं के बारे में बताया गया है।<sup>[35]</sup>

इसी तरह एक अन्य पुस्तक जोगराफिया मुब्तादियों की वास्ती भी ज़काउल्लाह द्वारा लिखी गयी। मुब्तादियों का अभिप्राय नौसिखियों से है। अर्थात् ऐसे छात्र जिनको भूगोल विषय के बारे में कोई सामान्य ज्ञान नहीं होता तो उन छात्रों को जानकारी देने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। जैसे भारत की भौगोलिक स्थिति व उसकी विशेषताओं का वर्णन। ऐसे ही एशिया, यूरोप व अमेरिका जैसे महाद्वीपों के बारे में छात्रों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है। भारत के बारे में सामान्य जानकारी देते हुए बताया गया है कि भारत देश के प्राचीन काल से कई नाम रहे हैं। साथ ही उन नामों को किसके द्वारा रखा गया उसका भी उल्लेख है। हिन्दुओं ने इस देश का नाम राजा भरत के नाम पर 'भारत' नाम रखा, मुसलमानों ने 'हिन्दुस्तान' कहा और अब अंग्रेज 'इंडिया' इस देश को कहते हैं।<sup>[36]</sup>

साथ ही हिन्दुस्तान के विभिन्न धार्मिक<sup>[37]</sup> समुदायों और अलग-अलग क्षेत्रों में विस्तारित जनसंख्या के बारे में भी बताया गया है।

इस पुस्तक में भारत के रेलवे नेटवर्क के बारे में भी विस्तार से बताया गया है। कौन सी रेल कहाँ से कहाँ तक चलती थी? उसकी दूरी कितनी थी? कौन-कौन से स्टेशनों से होकर गुज़रती थी? जैसे कि एक महत्वपूर्ण रेल मार्ग ईस्ट इंडिया रेलवे का उल्लेख है। वो रेल कलकत्ता से दिल्ली तक चलती थी। इसी तरह पंजाब-दिल्ली रेलवे का वर्णन है जिसकी दूरी 565 मील थी। ऐसी ही लगभग 12 यात्रा मार्गों का विवरण इस पुस्तक में दिया गया है।<sup>[38]</sup>

इससे स्पष्ट ही यह मालूम हो जाता है कि भूगोल विषय के अंतर्गत विद्यार्थियों को कौन-कौन से पहलुओं के बारे में बताया जाता था? ज़काउल्लाह का ध्यान पूरी तरह छात्रों को पुस्तक के माध्यम से अधिक से अधिक ज्ञान देने का था। इसीलिए उन्होंने छोटी-छोटी चीजों का भी जैसे विभिन्न भाषाओं<sup>[39]</sup> के अध्ययन को भी दिखाया है। जिस तरह रेलवे नेटवर्क के बारे में इस पुस्तक में बताया गया है। उससे यह प्रतीत होता है कि औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार द्वारा

स्थापित और इस सरकार को चलाने में सहायक बिन्दुओं के वर्णन को पुस्तक में प्रमुख स्थान दिया गया है। इसके जरिए लेखक ने मुख्यतः औपनिवेशिक सरकार के कार्यों को ब्रिटिश शासन की उपलब्धि के रूप में दर्ज किया है जिसका उपयोग सामान्य लोगों के द्वारा अपने जीवन की प्रगति के लिए किया जा रहा था। बताया गया कि रेलवे का नेटवर्क भारत में कितना फैल गया था। अर्थात् यह एक प्रकार से रेल के माध्यम से औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार को वैध करार देना था और रेलवे की लंबी-लंबी दूरियाँ यही दर्शा रही थी कि सरकार की संप्रभुता पंजाब, बंगाल, संयुक्त प्रान्त और बंबई आदि क्षेत्रों में स्थापित हो चुकी थी। अर्थात् ब्रिटिश सरकार की यह संप्रभुता रेलवे स्टेशनों और उसकी पटरियों में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हो रही थी। इस तरह पाठ्यपुस्तकें ब्रिटिश सरकार के लिए अपनी सत्ता को विद्यालयों के छात्रों के बीच में वैधता प्राप्त करने का एक उचित माध्यम बन चुकी थी। औपनिवेशिक शिक्षा की यह पाठ्यपुस्तकें विद्यालयों में लाखों छात्रों को औपनिवेशिक ज्ञान प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन चुकी थी। इसके साथ ही ब्रिटिश सरकार इस धारणा पर भी बल दे रही थी कि वह कितना काम भारत के ऐसे पिछड़े व असभ्य लोगों के कल्याण के लिए कर रही है और उनको आधुनिक बना रही है। सरकार स्कूल के विद्यार्थियों के मध्य स्वयं को इस प्रकार दिखा रही थी कि उनकी मानसिकता भारत के पिछड़े लोगों को आधारभूत सुविधाएं प्रदान कराना है।

### ज़काउल्लाह द्वारा अन्य विषयों पर लिखी गयी पाठ्यपुस्तकें व किताबें

ज़काउल्लाह ने एक अन्य पुस्तक मबादिउल इंशा [40] लिखी। यह पुस्तक पंजाब व अवध के पश्चिमी व उत्तरी क्षेत्रों के मदरसे के छात्रों के लिए 1892 में लिखी गयी। यह किताब सामान्यतः उर्दू के उन छात्रों के लिए थी जो नज़्म व शेरों-शायरी लिखना पसंद करते थे। इसमें बताया गया है कि नज़्म व शेरों-शायरी [41] कैसे लिखें? साथ ही नज़्म के प्रकार [42] कौन-कौन से होते हैं? जैसे इसमें नज़्म के एक प्रकार आशिकाना के बारे में विस्तार से बताया गया है। ऐसे ही नज़्म के गुणों [43] के बारे में भी जानकारी दी गयी है।

इसके अलावा ज़काउल्लाह ने मदरसे की शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन और उसके लिए अपने सुझाव देते हुए रिसाला मजालिस-ए-मुनाज़िरा नामक पुस्तक लिखी। वह कहते हैं कि मदरसों के छात्र केवल किताबें पढ़ते हैं और उनको याद करते हैं। उन छात्रों को यह नहीं सिखाया जाता कि अपने विचारों को किस तरह अभिव्यक्त करें? या किसी समस्या का समाधान किस तरह निकालें? तकरीर या भाषण किस तरह दिया जाता है। यह मदरसे के छात्रों को बिल्कुल भी नहीं सिखाया जाता। ज़काउल्लाह मदरसे की शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन करते हुए कहते हैं कि 'यह कैसी गजब की गलती है कि अल्फाज़ के लिए बोलना सिखाया जाये लेकिन बोलने के लिए अल्फाज़ ही न सिखाये जाये'। [44] इस तरह उन्होंने मदरसे की शिक्षा व्यवस्था में कमी की ओर इशारा किया।

ज़काउल्लाह का स्पष्ट रूप से मानना था कि छात्रों को बहस करना सिखाया जाए क्योंकि इससे ज्ञान में वृद्धि होती है। [45] इसीलिए उन्होंने यह पुस्तक लिखी ताकि मदरसे के छात्र बहस करना सीख सकें। मुनाज़िरा के क्या-क्या नियम होते हैं? उनकी क्या सीमा होती है? उन्होंने उदाहरण के लिए छात्रों के सामने बहस का एक विषय भी रखा जैसे मुद्रण (प्रिंटिंग) व स्टीम इंजन के फायदे। [46] इस उदाहरण के माध्यम से ज़काउल्लाह ने यह बताया कि बहस के दौरान छात्रों को मुद्रण व स्टीम इंजन से संबंधित कितनी जानकारी होनी चाहिए और स्वयं को किस तरह से अभिव्यक्त करना चाहिए।

ज़काउल्लाह ने भारत के वायसराय लार्ड कर्ज़न के कार्यों व नीतियों की प्रशंसा करते हुए 1907 में कर्ज़ननामा पुस्तक लिखी। उन्होंने इस पुस्तक में मुनाजरे (वार्तालाप) के रूप में ब्रिटिश सरकार द्वारा सिंचाई

व रेल के हुए कार्यों और उनके फायदों को विस्तार से दिखाया है। हिंदुस्तान के विभिन्न भागों में फिरोजशाह तुगलक के काल से ब्रिटिश काल तक हुए सिंचाई के कार्यों का वर्णन है। जिसके अंतर्गत मुख्य रूप से नहरों के निर्माण को दिखाया गया है। वह भारत के विभिन्न भागों में सिंचाई की स्थिति के बारे में कहते हैं कि बंगाल में बारिश बहुत होती है और तालाबों और कुंडों को गहरा बनाने की आवश्यकता है। ऐसे ही मद्रास व दक्कन में भूमि असमतल है वहाँ बांधों के साथ कुंड व तालाब बनाने की जरूरत है। [47] ब्रिटिश सरकार को सलाह देने के रूप में वह लिखते हैं कि सिंचाई पर निवेश करना सूखे से बचने की एक अच्छी योजना है। [48]

इस तरह मुंशी ज़काउल्लाह के लिखने का दायरा बहुत ज्यादा विस्तृत था। उन्होंने न सिर्फ विज्ञान, गणित, भूगोल पर पुस्तकें लिखी बल्कि नज़्म व शेरों-शायरी और बहस (मुनाज़िरा) पर भी लेखन कार्य किया। अर्थात् इसमें केवल पश्चिमी शिक्षा पर पुस्तकें ही शामिल नहीं थी बल्कि मदरसे में धर्मशास्त्रीय प्रकार की शिक्षा पाने वाले छात्र भी उनके दायरे में थे। उन छात्रों को भी ज़काउल्लाह ऐसे कार्यों से अवगत कराना चाहते थे जिनसे उनमें तार्किक शक्ति व मुद्दों पर बहस करने का गुण विद्यमान हो सकें।

### निष्कर्ष:

मुंशी ज़काउल्लाह ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखी। इन पुस्तकों से सामान्य रूप से यही प्रतीत होता है कि वह विषय की सामान्य जानकारी तो प्रदान कराना चाहते ही थे लेकिन साथ में ब्रिटिश सरकार के कार्यों से होने वाले फायदों को भी रेखांकित करना चाहते थे। अर्थात् छात्रों को वह अपनी किताबों के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता द्वारा किए जाने वाले आधारभूत कार्यों की जानकारी प्रदान कर रहे थे। साथ ही वह उर्दू में लेखन कर अपनी देशीय भाषा व संस्कृति से विद्यार्थियों को अवगत करा रहे थे। लेकिन उन्होंने कहीं भी ब्रिटिश सरकार के कार्यों के प्रति अपने लेखन में आलोचनात्मक नज़रिया नहीं अपनाया। ब्रिटिश सरकार के अनेक कार्यों का वर्णन कर ज़काउल्लाह ने अंग्रेज़ी सत्ता व उसके शासन को पाठ्यपुस्तकों के जरिए वैधता प्रदान करने का कार्य किया। भारत के पिछड़े क्षेत्रों में अनेक ढांचागत कार्यों को अंजाम देकर ब्रिटिश सरकार ने भारत में पाठ्यपुस्तकों के जरिए अपने शासन का औचित्य सिद्ध करने का प्रयास किया और बच्चों के सामने यही ध्येय रखा कि हम एक असभ्य देश को सभ्य बनाने के मिशन में लगे हैं।

### References

#### प्राथमिक स्रोत

1. <https://archive.org> (accessed 05-12-2021), The Despatch of 1854, on General Education in India, Reprinted Council on Education in India, London Adam Street.
2. <https://archive.org> (accessed 05-01-2022), Report Of The Indian Education Commission, 1882, Calcutta Printed by the Superintendent of Government of Printing India, 1883.
3. <https://archive.org> (accessed 20-01-2022), (By Command of His Majesty) Progress of Education in India, 1907-1912 Vol. I, sixth Quinquennial Review, Printed in India, 1914.

#### उर्दू भाषा के स्रोत

1. <https://www.rekhta.org> (accessed 10-01-2022), ज़काउल्लाह, मुंशी कर्ज़ननामा, देहली, 1907.
2. <https://www.rekhta.org> (accessed 30-11-2021), ज़काउल्लाह, मुंशी रिसाला मजालिस-ए-मुनाज़िरा, मल्हा शम्सुल मल्हे, देहली, 1893.
3. <https://www.rekhta.org> (accessed 10-10-2021) ज़काउल्लाह, मुंशी मबादिउल इंशा, भाग-4, मल्हा चश्मा-ए-फैज़, देहली, 1892.

4. <https://www.rekhta.org> (accessed 30-09-2021), ज़काउल्लाह, मुंशी जोगराफिया मुब्तादियों की वास्ती, मल्बा मुर्तज्वी देहली, 1875.
5. <https://www.rekhta.org> (accessed 10-07-2021), ज़काउल्लाह, मुंशी चार अंसुर इल्म-ए-कीमिया, मतबा मुर्ताज़वी, देलही, 1879.
6. <https://www.rekhta.org> (accessed 11-07-2021) ज़काउल्लाह, मुंशी जोगराफिया रियाज़िया मतबा मुर्ताज़वी, देलही, 1884.
7. <https://www.rekhta.org> (accessed 30-10-2021), ज़काउल्लाह, मुंशी जोगराफिया तबीये | इस पुस्तक पर प्रकाशक का नाम नहीं है और साथ ही किताब के जारी होने का वर्ष भी नहीं दिया गया है | लेकिन किताब के अंत में इसका सारांश लिखा गया है जिसमें मार्च 1876 तारीख दी हुई है |
8. <https://www.rekhta.org> (accessed 30-06-2021), हंटर, टॉड, अलजेब्रा फॉर बिगिनर्स विद नुमेरौस एक्साम्पल्स, मुंशी ज़का उल्लाह द्वारा उर्दू में अनुवाद किया गया, मतबा मुर्ताज़वी, देलही, 1871.
9. <https://www.rekhta.org> (accessed 10-07-2021), हंटर, टॉड, प्लेन त्रिगोमेट्री, मुंशी ज़का उल्लाह द्वारा इल्म-ए-मुसल्लस मस्तवी के नाम से उर्दू में अनुवाद किया गया, मतबा मुर्ताज़वी, देलही, 1871.
10. <https://www.rekhta.org> (accessed 30-01-2021) जमाल, डॉ. रफत, ज़का उल्लाह, हयात और उनके इल्मी व अदबी कारनामे, दिल्ली, 1990.
12. Hasan, Mushirul. A Moral Reckoning Muslim Intellectuals in Nineteenth-Century Delhi, Oxford University Press, New Delhi, 2007.
13. Habib S Irfan, Munshi Zakaullah. the Vernacularisation of Science in Nineteenth Century India, in Sehgal, Narendr, K., Satpal, Sangwan and Mahanti, Subodh (eds) Uncharted Terrains- Essays on Science Popularisation in Pre Independence India, Vigyan Prasar, New Delhi, 2000.
14. Gupta Vikas. (Ph.D. Thesis) Modernity and Education in Colonial India, a Study of Ideas, Interventions and Interlocutors, Delhi University, 2018.
15. Ahad Abdul. (Ph.D. Thesis) Muslim Education in Western Uttar Pradesh 1860-1930, Indira Gandhi National Open University, 2023.

## द्वितीयक स्रोत

1. Dash Santosh. English Education and the Question of Indian Nationalism: A Perspective on the Vernacular, Aakar Publication Delhi, 2009.
2. Hali, Altaf Hussain. Hayat-i-Javed (A Biographical Account of Sir Sayyid) Anuvad: K.H.Qadiri and David J. Mathews, Idarah-i Adabiyat-i Delhi, 1979.
3. <https://www.rekhta.org> (accessed on, 30-01-2021) किदवई, सदीकुररहमान, मास्टर रामचन्द्र, उर्दू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1961. (उर्दू भाषा)
4. Andrews CF. Zakaullah of Delhi, OUP, New Delhi, 2003.
5. Leliveld David, Aligarh's First Generation, Muslim Solidarity in British India, OUP, New Delhi, 1978.
6. चंद्र, विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वान, तेलंगाना, भारत, 2008.
7. Minault, Gail, The Perils of Cultural Mediation: Master Ram Chandra and Academic Journalism at Delhi College, Pernau, Margarit (ed.) The Delhi College, Traditional Elites, the Colonial State, and Education before 1857, OUP, New Delhi, 2006.
8. Orsini, Francesca, Pandits, Printers and Others: Publishing in Nineteenth century Benares, Gupta, Abhijit and Chakravorty, Swapn (ed.) Print Areas Book History in India Permanent Black, Delhi, 2004.
9. Hans Harder, Nishat Zaidi and Torsten Tschacher, The Vernacular Three Essays on an Ambivalent Concept and its Uses in South Asia, Published by Fid4sa-Repository, Heidelberg University Library, 2022.
10. Paul, Nilanjana, Bengal Muslims and Colonial Education, 1854-1947 A Study of Curriculum, Educational Institutions and Communal Politics, Routledge, South Asia Edition, 2022.
11. Pernau, Margrit (ed.) The Delhi College: Traditional Elites, the Colonial State, and Education before 1857, Oxford University Press, New Delhi, 2006.